

॥ दत्त दयध्वम् दाम्यतु ॥



1001



यत् भावो तत् भवति



मिहिराज जग जेव
 प्रमद भगवान
 जगदीश के जगदा
 विनायक एह जग
 पुनर्जात जग जेह
 धर्म विनाशक
 सुदृष्ट, न कधीही
 हे नमः शिवाय



